[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 5032 **H**

Unique Paper Code : 2052201202

Name of the Paper : हिंदी का मौखिक साहित्य और उसकी परंपरा

Name of the Course : **B.A. (Prog.): (DSC-4) NEP-UGCF**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : (15×4=60)

1. मौखिक साहित्य की अवधारणा स्पष्ट करते हुए उसका सामान्य परिचय दीजिए।

अथवा

लोक साहित्य के विविध रूपों का परिचय दीजिए।

P.T.O.

2. लोक गीत की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

अथवा

सोहर लोक गीत का सोदाहरण परिचय दीजिए।

3. लोककथा का सामान्य परिचय दीजिए।

अथवा

लोक गाथा आल्हा की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

4. लोक नाट्य सांग का सामान्य परिचय दीजिए।

अथवा

लोक नाट्य 'विदेशिया' की सामान्य विशेषताएँ बताइए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : $(8 \times 2 = 16)$

(क) खेतन में लागी कटनिया हो राम।

माथे क झूमर झलाझल झलके,

खनके कलइया कँगनवा हो राम।।

मिलि जुलि के सखिया लाही बँधवाओ।

भरै चलो घर की बखरिया हो राम।।

अथवा

इंद्र कै बात सुनिकै भगवान का संतोषु भा औ तब उइ जमराज ते बोले - महाराज! यो तम्हइँ गड़बड़घोटाला कीन हउ, अब तुम्हहीं येहका पव्यारौं। किरपा करिकै ई पापिन का फिर धरती माँ छाड़ि आव; काहे ते, पाप गंगा के नहाए ते नहीं, अच्छे करमन ते खतम ह्वात हैं।

किरपा करिकै अइस भूल न किहेंव।

(ख) करि के गइलन बलमुआँ निरासा।

गवना करा के सँइयाँ घरे छोंडि दिहलन,

गइलन बिदेस हमें करि के बेकासा।

सँइयाँ के सुख हम कुछुओ ना जनलीं,

बिचहीं बिधाता बितवलन तमासा।

अथवा

दिन लिकड़ा पीली पटी, चलणे की सुरती रटी।

ना डरते फिरते करते रहे, सैल बन की रै।।

जब बाहर शहर तै लिकड़े, लम्बे लम्बे दरखत खड़े।

जड़ै चन्दन के देखें बिड़े।

खशबोई होई खोई दुर्गन्धी तन की रै।।

P.T.O.

6. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : (7×2=14)

(i) भांड

(ii) सोहर-गीत

(iii) अवधी लोक कथा

(iv) पंडवानी